द्वितीय वर्ष

प्रश्न– पत्र 11	संज्ञान अधिगम और बाल विकास **Cognition, Learning and Child Development**	106
प्रश्न– पत्र 12	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध **Understanding of Society, Education and Curriculum**	112
प्रश्न– पत्र 13	शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे **Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education**	116
प्रश्न– पत्र 14	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास **School culture, leadership and teacher development**	120
प्रश्न– पत्र 15	**Proficiency in English**	125
प्रश्न– पत्र 16	योग शिक्षा **Yoga Education (Second Year)**	129
प्रश्न– पत्र 17	पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण **Pedagogy of Environmental Studies (for early Primary and Primary)**	132
प्रश्न– पत्र 18	वैकल्पिक विषय शिक्षण **Optional Pedagogy Courses** क. सामाजिक विज्ञान शिक्षण **Pedagogy of Social Science** ख. अंग्रेजी भाषा शिक्षण **Pedagogy of English Language** ग. गणित शिक्षण **Pedagogy of Mathematics** घ. विज्ञान शिक्षण **Pedagogy of Science**	138

द्वितीय वर्ष – व्यावहारिक

5.	कार्य और शिक्षा **Work & Education**	158
6.	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	171
7.	बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **Children's Physical and Health Education**	175
8.	शाला स्थान बद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप) **Teaching Practice and School Internship**	180
9.	मूल्यांकन प्रपत्र	186

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

संज्ञान, अधिगम और बाल विकास

(COGNITION LEARNING AND THE DEVELOPMENT OF CHILDREN)

(प्रश्न पत्र–11)

पूर्णांक –100
बाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and Objective)

इस कोर्स का उद्देश्य छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना है। इस कोर्स की सहायता से शिक्षकों में शिक्षण अधिगम की समझ बनेगी और कक्षा में इसको उपयोग कर सकेंगे। यह उम्मीद की जाती है कि शिक्षक अनुदेशक बनने की अपेक्षा अधिक से अधिक सहयोगी एंव सुविधादाता बनें।

एक और उद्देश्य यह है कि छात्रों में शोध विधि की समझ बनाना तथा बच्चों के बहु संदर्भों में इसे करके देखना।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) –

1. छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना।
2. चिन्तन की प्रक्रिया को समझना। विभिन्न सिद्धांन्तों/परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से बच्चों में अधिगम को समझना, जो उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिबिम्बित हों।
3. विकास और सार्वभौमिक संस्कृति विभिन्न सिद्धान्त/परिप्रेक्ष्य के योगदान को संपूर्ण रूप से समझना।
4. बच्चों को ध्यान में रखकर सिद्धान्तों को लागू करना/छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना जिससे वे सिद्धांत और वास्तविक जीवन में बच्चों की अंतःक्रिया में संबंध स्थापित करें।
5. सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को समझना।
6. शिक्षा के सिद्धान्तों को समझते हुये छात्र–शिक्षकों को शिक्षण में सक्षम करना।
7. उन कारकों की समझ बनाना जो सीखने में सुविधा प्रदान करते हैं।
9. सीखने के सिद्धान्तों को समझने के लिए छात्र शिक्षक को सक्षम बनाना और उन्हें पाठ्यक्रम नियोजन और पाठ्यक्रम अंतरण के लिए निहितार्थ करना।

छात्र–शिक्षक एक सामाजिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बच्चों के विकास और सीखने के लिए विभिन्न प्रविधियों की एक महत्वपूर्ण समझ विकसित करता है साथ ही इसमें सामाजिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ–साथ, व्यवहारवाद का सिद्धान्त, संज्ञानात्मक विकास , सूचना प्रविधि आदि भी शामिल है।

इकाई के साथ विकास के प्रत्येक पहलू के महत्व को शामिल करने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए इकाईयों के साथ–साथ भौतिक विकास, अनुभूति और भाषा विकास के लिए खेल, कला तथा कहानी कहने जैसी गतिविधियों को शामिल करने का सचेत प्रयास किया गया।

3. इकाईवार अंको का विभाजन–

क्र.	इकाई का नाम	अंक
1.	अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया	10
2.	बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया	15
3.	संज्ञान एवं अधिगम	20
4.	भाषा एवं सम्प्रेषण	15
5.	खेल, स्व एवं नैतिक विकास	10
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई–1 अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया (Concept and process of Learning)

अधिगम : अधिगम की अवधारणा एवं प्रकार (गैग्ने का वर्गीकरण)

- **बच्चों के सीखने की प्रक्रिया** : अधिगम एंव स्मृति में सुधार, स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति।
- **अधिगम एवं स्मृति** : स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति, अधिगम का हस्तांतरण व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ।
- अधिगम की कठिनाईयों की अवधारणा एवं प्रकार।
- सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।

इकाई 2. बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया (Concept Formation and thinking childhood)

अवधारणा निर्माण :

- अवधारणा का अर्थ : अवधारणा निर्माण में होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ।

- बचपन में अवधारणाओं के विकास को प्रभावित करने वाले कारक।
- समय, स्थान, कार्य–कारण एवं स्वयं, की अवधारणाओं का विकास।
- अवधारणा अधिगम का ब्रूनर मॉडल।
- पियाजे का मानसिक विकास का सिद्धांत, पियाजे और अन्य मनोवैज्ञानिकों के अवधारणा निर्माण के बारे में विचार।

चिंतन एवं तर्क :

- चिंतन की अवधारणा एवं प्रकृति।
- चिंतन के साधन : ध्यान प्रत्यक्षीकरण, छवि, अवधारणा, प्रतीक, चिन्ह, सूत्र।
- चिंतन में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ।
- चिंतन एवं अधिगम के बीच संबंध।

इकाई 3. संज्ञान एवं अधिगम (Cognition and Learning)

- **निर्माणवाद** : अवधारणा का परिचय, पियाजे का सिद्धान्त, अधिगम क्या है, संज्ञानात्मक विकास की संरचनाएं एवं प्रक्रियायें, विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक द्वंद्व के लक्षण, शिक्षण अधिगम के संदर्भ में इसका महत्व।
- **वायगोत्सकी का सिद्धान्त** : परिचय, सामान्य अनुवांशिकता संबंधी नियम, जेडपीडी **(ZPD)** की अवधारणा, विकास में उपकरण और प्रतीक, शिक्षण के संदर्भ में इसका महत्व।
- **सूचना संप्रेषण उपागम** : मस्तिष्क की बुनियादी बनावट (कार्यकारी स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, अवधान, कूटरचना (encoding) एवं पुनर्प्राप्ति (retrieval), मुखर स्मृति (declarative memori) में बदलाव के रूप में ज्ञान की रचना एवं अधिगम, स्कीमा परिवर्तन या अवधारणात्मक परिवर्तन, किस तरह ये एक सतत् चलन में विकसित होते हैं।
- **संज्ञान में वैयक्तिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर** : अधिगम कठिनाईयों को समझना, बहिष्करण एवं समावेशन की स्थितियां एवं प्रभाव।

इकाई 4. भाषा एवं सम्प्रेषण (Language and Communication)

- बच्चे किस तरह संप्रेषण करते हैं?
- भाषा विकास के संबंध में दृष्टिकोण : किस प्रकार बच्चे इसे सीखते हैं। (बच्चे शुरुआती उम्र में किस तरह भाषा सीखते हैं, के संदर्भ में)
- प्रारंभिक आयु में भाषा।
- स्किनर का सक्रिय अनुबंध का सिद्धांत सामाजिक अधिगम के बारे में बन्डूरा और वाल्टर का सिद्धान्त।
- जन्मजातवादी – चोम्स्कीवादी (Nativist-Chomskian) का दृष्टिकोण।
- व्यवहारवाद की समालोचना की दृष्टि से इन सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों की तुलना।
- भाषा के उपयोग : बातचीत में भागीदारी, संवाद, वार्तालाप करना और सुनना।

- भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक विविधता : उच्चारण, संवाद में अंतर, भाषायी विविधता, बहु सांस्कृतिक कक्षा के लिए इसका महत्व।
- द्विभाषी एवं त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए इसका महत्व– बहुभाषिक कक्षा, शिक्षण विधि के रूप में कहानी कहना।

इकाई 5. खेल, स्व एवं नैतिक विकास (Play, Self and Moral Deveopment)

- खेल का अर्थ, विशिष्टतायें एवं प्रकार।
- **खेल एवं इसके कार्य** : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा व स्नायु विकास (motor development) से इसका सम्बन्ध, बच्चों के खेल में सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव।
- खेल एवं समूह गतिकी की अवधारणा (group dynamics) : खेलों के नियम; बच्चे किस तरह मतभेदों को सुलझाना एवं निपटाना सीखते हैं।
- स्वयं का बोध; स्व–विवरण, स्वयं की पहचान, स्वाभिमान का विकास, सामाजिक तुलना, आत्मसात करना एवं स्व–नियंत्रण।
- **नैतिक विकास** : इस संदर्भ में कोलबर्ग एवं कैरोल गिलिगन्स का नैतिक विकास के समालोचनात्मक विचार।

3. **सत्रगत कार्य (Assignment)–**
4. **(Theme) थीम– बच्चों के संसार से क्या और कैसे–कैसे**

- कुल घंटे– 25 (क्षेत्र पर + अभिलेख व्ययस्थापन और कक्षा कक्ष में चर्चा)

प्रोजेक्ट कार्य–1

- 4 से 7 आयु समूह के बच्चों को अलग–अलग थीम पर (चित्र) बनाकर देकर छात्र अध्यापक छात्रों से चयन करने को कहेंगे। बच्चों को खींचे गये चित्र पर बात करने को कहेंगे। छात्र कोशिश करेंगे और समझेंगे क्या चित्र है समाज में क्या बातचीत हो रही है और देखा जायेगा कि ड्राइंग के सांकेतिक विचार को बच्चा कैसे देख रहा है। छात्र अध्यापक एक पैटर्न बनाएंगे कि चित्रों को देखकर बच्चों में क्या विचार उभरते हैं। छात्राध्यापक अन्य तरह की गतिविधियां भी आयोजित कर सकते हैं। वह इस तरह की गतिविधियां कराते हुये बच्चों के जवाब के अभिलेख तैयार करेंगे।

प्रोजेक्ट कार्य–2 :

- 2 घंटे क्षेत्र पर लगाया गया समय / स्व अध्ययन 4 घंटे
- छात्र अध्यापक खेलते हुये बच्चों का अवलोकन करेंगे तथा अभिलेख रखेंगे। 2 घंटे में कम से कम 4 अवलोकन करेंगे। यह अवलोकन आस पड़ोस के खेल मैदान के हो सकते, स्कूल के भी हो सकते हैं। बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेल को छात्राध्यापक पहचानेंगे । खेल के दौरान बच्चों के व्यक्तिगत

और समूह के व्यवहार के अंतर्गत मित्रों के साथ और सामाजिक संबंध को देखेंगे। निम्नलिखित पहलुओं पर विश्लेषण करेंगे–

- गामक कौशल,
- खेलते समय उपयोग में लाई जाने वाली भाषा,
- समूह संरचना, अंतक्रिया नियम और उसका पालन,
- लिंगीय व्यवहार,
- समझौते का पैटर्न,
- संघर्ष करना,
- लोकगीत और खेल,

  यह सत्रगत कार्य पश्च सत्रगत कार्य का अनुसरण करेगा।
- संपर्क घंटे 6 (क्षेत्र पर + स्व अधिगम पर)

प्रोजेक्ट कार्य–3

- स्कूली बच्चों के आयु समूह के हिसाब से कोई प्रसिद्ध फिल्म या कार्टून छात्राध्यापक को छांटना होगा। छात्राध्यापक साक्षात्कार शेड्यूल बच्चों के लिये और अवलोकन चेक लिस्ट बनाएंगे। चेक लिस्ट के माध्यम से फिल्म में वह चीज देखी जायेगी जो अधिकांश बच्चों को आकर्षित करती है और विभिन्न पहलुओं पर समालोचनात्मक विश्लेषण करेंगे। बच्चों में क्षमता का पता लगाएं कि वे कल्पना और वास्तविक में अंतर कर सकते हैं? छात्राध्यापक को इससे अवसर देना होगा।
- **संपर्क 2 घंटे क्षेत्र पर + स्व–अध्ययन– 5 घंटे**

प्रोजेक्ट कार्य–4

- छात्राध्यापक को ऐसे वीडियो गेम का चयन करना है जो स्कूली बच्चों में ज्यादा लोकप्रिय हो। इसके लिये एक ऐसा साक्षात्कार सेड्यूल और अवलोकन चेक लिस्ट बनाये जो वीडियो गेम के आक्रामक बिन्दुओं को लेकर बनाया गया है। जिसे लेकर बच्चों को देखना पसंद हो ऐसे पहलू शामिल हो।
- संपर्क 2 घंटे (क्षेत्र पर) 5 घंटे स्व अध्ययन के लिये
- शिक्षण के लिए निर्देश – उपरोक्त प्रायोगिक कार्य हेतु योजना बनाना, विद्यार्थियों को जोड़ियां या समूह में कार्य आवंटित करना, अधिकतम स्थानीय संसाधनों एवं उपलब्ध आई सी टी का उपयोग कर शिक्षण एवं प्रगति का आकलन किया जाना है।

5. अंतरण की विधियाँ – (Mode of transaction)

- संप्रत्यात्मक समझ के लिये कक्षा में चर्चा करवाना
- पाठ्य सामग्री का गहन अध्ययन एवं पत्र लेखन करना।
- सत्रगत कार्यों संबंधित मुद्दे पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रस्तुतीकरण करना
- सैद्धान्तिक और प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास/खोज,

- बाल अध्ययन की विधियां– अवलोकन, आंकड़ों का संग्रहण, शाला त्यागी संबंधी, एवं विशिष्ट बालकों का अध्ययन।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा विनोद मंडल
- भटनागर, सुरेश (तृतीय सस्करण), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, दिल्लीः आर. एल. बुक डिपो
- भटनागर,वी (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, आर.एल. बुक डिपो
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण) बाल मनेविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- मंगल, एस. के. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा पी. एच. आई. लर्निंग पी. एल.
- माथुर एस. एस. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी. डी. (चालीसवां संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- शर्मा, आर. (प्रथम संस्करण) शिक्षा अधिगम मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- शर्मा, वी. (पंचम संस्करण) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान डॉ. एस. पी. गुप्ता, डॉ. अलका गुप्ता
- गिजुभाई बधेका – प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा
- गिजुभाई बधेका – बाल शिक्षण जैसे मैंने समझा
- गिजुभाई बधेका – चलते – फिरते।
- Mind in Society - Lev Vygotsky (Published by Harvard university press)
- Educational Psychology o" Kelly
- Educational Psychology, S.K. Mangal
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध

Understanding of Society, Education and Curriculum

(प्रश्न पत्र –12)

पूर्णांक –100

बाह्य अंक – 70

आंतरिक – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

भावी शिक्षकों के रूप में छात्राध्यापक को शिक्षा के मूल सिद्धांतों व अवधारणाओं की समझ बनाने की आवश्यकता होगी। यह प्रश्न पत्र छात्राध्यापक को शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे वे शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श व तथ्यों की पड़ताल कर सकें। वर्तमान समय की जरूरत है कि समाज व शिक्षा के अंतर्संबंधों को समझा जाये जिससे समाज में व्याप्त असमानता व संघर्ष के मुद्दों के साथ निपटा जा सके। न्याय, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा व विविधता को सम्बोधित किया जा सके। शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की जब हम एक दार्शनिक व ऐतिहासिक समझ बनाते हैं तो हमें शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के बीच का संबंध समझ में आता है।

भावी शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, छात्राध्यापक को शिक्षा की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। यह पेपर भारत में शिक्षा के दार्शनिक, दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे छात्राध्यापक शिक्षा के मूलभूत सवालों पर विमर्श कर सकें। इसके माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की समझ विकसित हो सकेंगी।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व को समझना
- शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक आयामों की समझ विकसित करना।
- ज्ञान, शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बारे में लंबे समय से प्रचलित धारणाओं की पड़ताल करना और एक अर्थपूर्ण समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को अलग अलग तरह की विचारधारा व दृष्टिकोण से परिचित कराना जिससे वे एक सुरक्षित, समतावादी और सीखने सिखाने का एक अच्छा माहौल तैयार कर सकें।

शिक्षा की यह दार्शनिक, समाजशास्त्रीय व ऐतिहासिक समझ डी.एल.एड. के पूरे कोर्स के लिए एक ठोस पृष्ठभूमि तैयार करेगी । यह पृष्ठभूमि छात्राध्यापकों को मानवीय प्रवृत्ति, ज्ञान और सीखने की मूलभूत अवधारणाओं पर अलग–अलग दृष्टिकोण से समझ बनाने में मदद करेगा। इन सभी चीजों पर छात्राध्यापकों की एक समीक्षात्मक समझ बनेगी। यह कोर्स शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के अन्तर्संबंधों को प्रस्तुत करेगा। भारतीय शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर इन इकाइयों द्वारा छात्राध्यापकों को एक अर्थपूर्ण समझ बन सकेगी।

3. इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)	20 अंक
2	2	शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)	20 अंक
3	3	शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society)	15 अंक
4	4	ज्ञान (Knowledge)	15 अंक
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई 1 : शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)

- मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता एवं महत्व
- विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा के बीच संबंध और मानव समाज में विविध शैक्षिक प्रक्रियाओं की जांच पड़ताल
- विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विचारकों के द्वारा विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा पर विचार : रूसो, ड्यूवी, मॉन्टेसरी, गांधी, टैगोर, गिजुभाई, अरविन्दो,
- मानव प्रकृति, समाज, अधिगम और शिक्षा के उद्देश्य के बारे में मूलभूत धारणाओं की समझ

इकाई 2 : शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)

- शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य (उद्देश्य एवं मूल्य)
- सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक रूपांतरण के लिए शिक्षा
- निम्नांकित बुनियादी अवधारणाओं को बच्चों की शिक्षा के संबंध में समझना

  अ. सामाजिक विषमता और समानता, संसाधनों के बंटवारे, अवसरों एवं बुनियादी जरूरतों की उपलब्धता में असमानता और समानता

  ब. समता

  स. गुणवत्ता

  द. अधिकार एवं कर्तव्य, शाला प्रबंध समिति का गठन, प्रक्रिया एवं भूमिका

  ई. मानव एवं बाल अधिकार

  फ. सामाजिक न्याय : भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं उसकी मूलभूत अवधारणाएं, मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने में शिक्षा की भूमिका

इकाई 3 : शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society)

- ब्रिटिशकाल के दौरान भारत में शिक्षा ।
- भारतीय समकालीन शिक्षा : औपनिवेशिक विरासत की निरन्तरता में एवं उससे हटकर
- वर्ग, जाति, लिंग एवं धर्मों के संदर्भ में वर्चस्व के पुनरुत्पादन में और हाशियाकरण को चुनौती देने में शिक्षा की भूमिका
- शिक्षा की राजनीतिक प्रकृति
- शिक्षक एवं समाज : शिक्षकों के स्तर का समालोचनात्मक आकलन

इकाई 4 : ज्ञान (Knowledge)

- बच्चे में ज्ञान का निर्माण : गतिविधि एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन करना
- ज्ञान का स्वरूप एवं बच्चे ज्ञान का निर्माण कैसे करते हैं (ज्ञान और सीखना)
- मान्यता, जानकारी, ज्ञान एवं समझ की अवधारणा
- ज्ञान के प्रारूप : विविध प्रकार के ज्ञान एवं उनकी वैधता प्रक्रियायें
- पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियायें एवं मापदण्ड
- देश /राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (NCF 2005)
- पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम
- बच्चों का विकास एवं पाठ संबंधी अनुभवों का संयोजन
- पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि एवं बच्चों का आकलन

सत्रगत कार्य– कोई तीन

1. विद्यार्थियों में सामाजिक विकास और सामाजिक बदलाव में शिक्षक की भूमिका चिन्हांकित करना।
2. गतिविधियों एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन होता है इसे बच्चों के संदर्भ में वर्णित करना।
3. वर्तमान शिक्षा में राजनीति का हस्तक्षेप– एक चिन्तन पर अपने विचार लिखना।
4. विद्यालय स्तर पर निष्पक्षता और समानता के अवसरों की उपलब्धता पर एक रिर्पोट तैयार करें।

अंतरण की विधियां : (Mode of Transaction)

- समीक्षात्मक चिंतन व सवाल करना।
- संवाद और चर्चा।
- संगोष्ठियों/फिल्म, समूह कार्य, प्रोजेक्ट कार्य, फील्ड वर्क, लेख/नीतियों एवं दस्तावेजों पर समीक्षात्मक चर्चा।
- इकाईयों को अंतर्सम्बंधित करते हुए शिक्षण कार्य।
- इकाईयों का अध्ययन कराते समय सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक संदर्भों का ध्यान रखा जाए।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- गिजू भाई बधेका (2001) – बाल शिक्षण और शिक्षक
- एस. शुक्ला एवं कृष्ण कुमार –शिक्षा का समाज शास्त्रीय संदर्भ –ग्रंथ शिल्पी
- जॉन ड्यूई (2009) – स्कूल और समाज – आकार प्रकाशन, चंडीगढ़
- जे. कृष्ण मूर्ति (2006) – शिक्षा पर कृष्ण मूर्ति के विचार कृष्ण मूर्ति फाउन्डेशन, वाराणसी
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर (2004)– रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन – चेप्टर–1 एवं 7–ग्रंथ शिल्पी
- कृष्ण कुमार (2007) – शिक्षा और संस्कृति
- पाउलफ्रेरे –उत्पीड़ितों का शिक्षा शास्त्र, ग्रंथ शिल्पी
- रोहित धनकर –शिक्षा और समाज, आधार प्रकाशन, चंडीगढ़
- एन.सी.ई. आर. टी–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पत्र : 1. शिक्षा के उपलक्ष्य 2. पाठ्यचर्या , पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें।
- छत्तीसगढ़ डी. एड. पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – ज्ञान, शिक्षा क्रम एवं शिक्षा शास्त्र चेप्टर– 2,5 एवं 6
- गिजुभाई बधेका– शिक्षकों से
- गिजुभाई बधेका– मॉनेसरी पद्धति
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Krishnamurti, J. (2006). *Krishnamurti on Education*. Part I: Talks to Students: Chapter 1: On Education, Chapter 4: On Freedom and Order, Part II: Discussion with Teachers: Chapter i: On Right Education. Chennai: Krishnamurti Foundation of India.
- Saxena, Sadhana (2007). 'Education of the Masses in India: A Critical Enquiry'. In Krishna Kumar and Joachim Oesterheld (Eds.) *Education and Social Change in South Asia*. New Delhi: Orient Longman.
- Thakur, R. (2004). *Ravindranath ka Shikshadarshan*. Chapter i: Tote ki Shiksha.Chapter 7: Aashram Shiksha, New Delhi: Granthshipli.

CDs/DVDs for Discussion

1. CIET/NCERT CD ROM *Four Educational Riddles* by Krishna Kumar
2. Debrata Roy *DVD,The Poet & The Mahatma*
3. Krishnamurthy Foundation India DVD *The Brain is Always Recording*
4. NCERT CD ROM *Battle For School* by Shanta Sinha
5. NCERT CD ROM *Globalisation and Education*
6. Sri Aurobindo Ashram Trust DVD *India and Her Future*

शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे

Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education

(प्रश्न पत्र–13)

पूर्णांक –100

बाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य–(Rationale and Objective)

यह कोर्स विविधता, असमानता व शिक्षा के बीच के जटिल संबंधों के बारे में बात करता है। इसका उद्देश्य छात्राध्यापकों को जीवन के अनुभवों में व्याप्त विविधता और विभिन्न प्रकार के बच्चों के आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाना है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वंचित समुदाय से आने वाले बच्चों व लड़कियों को परंपरागत रूप से शिक्षा के विमर्श के हासिए पर धकेला गया है। आज समावेशी शिक्षा को जिस तरह से समझा जा रहा है उसमें इन सभी को स्थान मिलना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के आलोक में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के लेंस से शिक्षा को देखने के बाद यह कोर्स समावेशी शिक्षा की प्रकृति और इसे कक्षा में लागू करने के लिए शिक्षक के लिए आवश्यक संवेदनशीलता और कौशलों के बारे में भी बात करता है।

यह कोर्स शिक्षा में उभरे नए दृष्टिकोणों के अध्ययन की बात करता है। आज सारे विश्व में विशेष आवश्यकता वाले बच्चें को मुख्य धारा की शिक्षा में सहभागी बनाने, उन्हें सामान्य विकास के लिए तैयार करने और साहस के साथ जीवन का सामना करने के लिए तैयार करने की दृष्टि से समावेशी शिक्षा को प्रचारित करने की आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया जा रहा है। आज शिक्षक कक्षा में इस तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं है जिसके चलते वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को समझने और तदनुरुप उनकी सीखने की प्रक्रियाओं को सहज बनाने में असफल रहते हैं। यही बात वंचित तबकों से आने वाले बच्चों, अनुसूचित जाति व जनजाति व लड़के एवं लड़कियां की विविध आवश्यकताओं के संदर्भ में भी लागू होती है। शिक्षक अपने पूर्वाग्रहों से बाहर निकलकर इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आप में पेशेवर क्षमताएँ विकसित करें इसकी सख्त आवश्यकता है।

समाज में हर स्तर पर व्याप्त अन्याय व भेदभाव को संबोधित करने के लिए जेंडर के सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करना भी शिक्षा में अपेक्षित है। इसके लिए शिक्षाशास्त्रीय तरीकों के साथ–साथ सिद्धांतों व वास्तविक जीवन के बीच संबंध स्थापित करना आवश्यक है जिससे महिलाओं के प्रति सम्मान व जेंडर समानता को सुनिश्चित किया जा सके। समाज व बच्चों में बढ़ती हिंसा व ध्रुवीकरण की चिंता का एक और बड़ा विषय है जो समाज में बढ़ते तनाव का परिणाम है। कक्षा प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में मूल्य और जीवन कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है जिससे वे दैनिक जीवन की आवश्यकताओं और चुनौतियों का सामना कर सकें तथा स्वयं व दूसरों के लिए सम्मान महसूस करते हुए शांतिपूर्ण समाज की स्थापना में योगदान दे सकें।

साथ ही आज की व्यावसायिक व प्रतियोगी जीवनशैली द्वारा उत्पन्न पारिस्थितिकीय विषमताओं से निपटने के लिए शिक्षक और विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों के मितव्ययी उपयोग के प्रति जागरूक करना होगा। इस तरह से आज के उभरते शैक्षिक दृष्टिकोणों के साथ जुड़ाव शिक्षकों को शिक्षा के संदर्भ को समझने तथा इच्छित पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र को विकसित करने में मदद करेंगी तथा व्यक्तिगत व संस्थागत रूप से परितर्वन के वाहक के रूप में काम करने के योग्य बनाएगा।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- समावेशी शिक्षा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना
- सीखने में पाठ्यचर्या, शाला संगठन और शिक्षण उपागम में मौजूद भेदभावपूर्ण रवैया कैसे बाधा बनता है समझना।
- स्कूल की संरचना/व्यवस्था (अंतर्निहित व स्पष्ट) किस प्रकार से सभी बच्चों को समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने में बाधक है उसे समझना।
- भारतीय कक्षा में असमानता व विविधता को सम्बोधित करने के लिए ऐसी पाठ्यचर्या व शिक्षणशास्त्र तैयार करना जो सभी बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ सके जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हों।
- पाठ्यचर्या और उसको लागू करने में जीवन कौशल और मूल्यों को सम्मलित करने की आवश्यकता को समझना।
- स्थानीय व वैश्विक वातावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना जिससे अपने भीतर, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य बन सके।
- समाज में मौजूद जेंडर असमानता की समीक्षात्मक समझ बनाना।
- शाला में जेंडर असमानता कैसे फलती फूलती है उसे समझना और जेंडर समानता लाने में शिक्षा की भूमिका को समझना।

3. इकाई अध्ययन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	अंक
1	समावेशी शिक्षा	22
2	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे	25
3	जेण्डर स्कूल एवं समाज	23
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई 1. समावेशी शिक्षा Inclusive Education

- भारतीय शिक्षा में समावेशन एवं बहिष्करण के रूप (समाज का हाशियाकृत वर्ग, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)।
- समावेशी शिक्षा का अर्थ।
- भारतीय स्कूली कक्षा में गैर बराबरी एवं विविधता पर नजर : शिक्षाशास्त्रीय एवं पाठ्यचर्या सरोकार।
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति को समझना एवं उसकी पड़ताल।

इकाई 2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे Children with Special Needs

- विशेष आवश्यकता एवं समावेशन के बारे में ऐतिहासिक व समकालीन दृष्टिकोण।
- अधिगम कठिनाईयों के प्रकार।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं बातचीत।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण उपागम व कौशल।

इकाई 3. जेण्डर स्कूल एवं समाज (Gender, School and Society)

- पुरुषत्व व स्त्रीत्व की सामाजिक संरचना।
- पितृसत्ता की अन्य सामाजिक संरचनाओं व पहचानों के साथ अंतर्क्रिया।
- स्कूल में जेण्डर पहचान को पुनः उभारना पाठचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षा प्रक्रियायें एवं विद्यार्थी– अध्यापक बातचीत।
- कक्षा में जेण्डर समानता के लिए काम करना।

सत्रगत कार्य – कोई तीन

1. अपने ग्राम/वार्ड के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्ततावार जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनकी कक्षा में समावेशन की स्थिति पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
2. अपने विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों को सूचीबद्ध कीजिए एवं किसी एक विषय पर इन बच्चों के लिए दो शिक्षण सहायक सामग्री विकसित कीजिए।
3. अपने क्षेत्र/जिले में निःशक्तजनों के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं की सूची बनाईए तथा किसी एक के कार्य, प्रक्रिया एवं उपादेयता पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
4. अपने क्षेत्र में विशेष निःशक्तता के प्रकार, प्रकृति कारण तथा रोकथाम के प्रयास पर आलेख तैयार कीजिए।
5. अपने विद्यालय/कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की आवश्यकताओं की सूची बनाइए एवं इनके बेहतर शिक्षण हेतु किए जा रहें प्रयास लिखिए।
6. किसी भी कक्षा की सामाजिक विज्ञान/भाषा की पाठ्यपुस्तक में समावेशिता तथा जेन्डर के मुद्दों का विश्लेषण कीजिए।

7. समावेशी शिक्षण के लिए स्कूल में बाधक तत्वों की पहचान करना और सकारात्मक वातावरण निर्माण के लिए सुझाव देना।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

1. शालेय प्रक्रियाओं में जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेशण तथा बहिष्करण की स्थितियों का अवलोकन करवाना।
2. शैक्षिक भ्रमण – बालिका छात्रावासों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चलाए जा रहे केन्द्रों का भ्रमण, बच्चों के साथ बातचीत करवाना।
3. समाज में जेण्डर सम्बधित मुद्दों के उदाहरण द्वारा प्रशिक्षणार्थी को संवेदनशील बनाना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ की सूची

- मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (2001) विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा शिक्षक मार्गदर्शिका ।
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2001) आधार, भोपाल, राज्य शिक्षा केन्द्र
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2005) भारतीय समाज में शिक्षा भाग–2 (प्रथम वर्ष) राज्य शिक्षा केन्द्र
- अग्रवाल गीता (1981) विकलागंता समस्या और समाधान, निधि प्रकाशन दिल्ली
- भार्गव, महेश (2004) पब्लिकेशन चिल्ड्रेन– देयर एजुकेशन एण्ड रिहबिलेटशन, एच.पी. भार्गव बुंक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- भार्गव, महेश (2004) विशिष्ट बालक, एच.पी. भार्गव बुंक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- मिश्र, विनोद कुमार (2003) विकलांगों के अधिकार कल्याणी शिक्षा परिषद, जाटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली
- जोसेफ, आर.ए. (2003) विकलांगता के क्षेत्र में अधिनियम पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- जोसेफ, आर.ए. (2004) विकलांगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष शिक्षा एवं पुर्नवास, समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- बन्दी शर्मा, आर.ए. (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Bhattacharjee, Nandini (1999). Through the looking-glass: Gender Socialisation in a Primary School in T. S. Saraswathi (ed.) *Culture, Socialization and Human Development: Theory, Research and Applications in India.* Sage: New Delhi.
- Ghai, Anita (2008). Gender and Inclusive education at all levels in Ved Prakash & K.
- Kumar, Krishna (1988). *What is Worth Teaching?* New Delhi: Orient Longman. Chapter 6: Growing up Male. 81-88. Singh, Renu (2009), The wrongs in the Right to Education Bill, *The Times of India,* 5 July.

शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास

(School culture, leadership and teacher development)

(प्रश्न पत्र–14)

पूर्णांक –100
बाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन– 30

औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and Objective)

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के लिए आनन्दमयी और सार्थक वातावरण प्रदान करना है। शिक्षा के विचार और इसके क्रियान्वयन के बीच लम्बा फासला होता है, जिसके लिए कई महत्वपूर्ण घटक कार्य करते हैं। इनमें शिक्षक, अभिभावक, शाला प्रमुख, जिला एवं विकास खण्ड अधिकारी, शिक्षाविद्, समुदाय, नीति निर्धारक और बच्चे शामिल है।

स्कूलों की संरचना किस प्रकार होती है? गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सरकारी अधिकारी क्या भूमिका निभाते हैं? किस तरह का नेतृत्व प्रभावी स्कूली शिक्षा को सुनिश्चित कर सकता है? शैक्षिक मापदण्ड किस तरह से निर्धारित एवं व्याख्यायित किए जाते हैं? शिक्षा में बदलाव किन प्रक्रिया से सुनिश्चित किया जा सकता है? यह पाठ्यक्रम इस पहेली के इन सारे टुकड़ों को एक साथ लेकर आता है जो प्रभावी स्कूली शिक्षा की संरचना करते हैं। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कार्यशालाओं, परिचर्चाओं, आलेखों और जमीनी अनुभवों पर आधारित प्रायोजना कार्य करने और उनके प्रस्तुतीकरण द्वारा छात्राध्यापक विद्यालय की संरचना एवं प्रबंधन को प्रभावी बनाने वाले घटकों की समझ विकसित कर सकेंगे।

सम्पूर्ण विश्व में शैक्षिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। नई सहस्त्राब्दी शुरु होते ही कई समुदायों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं, और इन सुधारों में शिक्षकों का पेशेवर विकास एक महत्वपूर्ण घटक है। आज वैश्यिक स्तर पर यह माना जा रहा है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण है अर्थात शिक्षक को अपने विषय के शिक्षण के साथ–साथ समाज में सुधार के लिए भी कार्य करना है। इस दोहरी जिम्मेदारी के चलते शिक्षकों के पेशेवर विकास का क्षेत्र बड़ा चुनौतीपूर्ण और ध्यान आकर्षित करने वाला बन गया है। इस नए प्रयास का शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा भी स्वागत किया गया है।

चूंकि इसके द्वारा शिक्षकों का पेशेवर विकास सुनिश्चित होता है साथ ही उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना भी मिलती हैं।

शिक्षकों का पेशेवर विकास एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें शिक्षक–शिक्षा, शिक्षक–प्रशिक्षण तथा वे अन्य सभी प्रयास आते हैं जो शिक्षक की योग्यता बढ़ाने में मदद करते हैं। शिक्षकों का क्षमतावर्धन जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षक बनने से लेकर सेवानिवृति तक चलती रहती है। यह पाठ्यक्रम सेवापूर्व शिक्षा के रूप में शिक्षकों की सतत तैयारी के प्रतिरूप को समझने में मदद करेगा, साथ ही उन शैक्षिक अनुभवों को भी

समझने में मदद करेगा जो शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रियाओं और एक पशेवर के रूप में उसकी कार्य प्रक्रियाओं को बेहतर बनाते हैं।

यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को शिक्षक शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं और सहयोगी संस्थाओं की भूमिका और योगदान को समालोचनात्मक रूप से जाँच करने के भी अवसर प्रदान करेगा।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)–

इस पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्राध्यापकों को स्कूली शिक्षा को गठित करने वाले सभी मुद्दों एवं घटकों की विस्तृत समझ को निर्मित कर पाना है। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- छात्राध्यापकों को भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं से परिचित कराना।
- शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में स्कूल की संरचना और प्रबंधन के विचार को स्पष्ट रूप से समझने में छात्राध्यापकों की सहायता करना।
- किसी स्कूल की प्रभावशीलता के विशिष्ट सन्दर्भों को समझने में मदद करना।
- शालेय नेतृत्व एवं प्रबंधन में बदलाव की समझ को विकसित करने में मदद करना।
- शैक्षिक नेतृत्व, बदलाव के घटक और व्यावहारिक परियोजना कार्यों के बीच के संबंधों को पहचान पाने में छात्राध्यापकों की मदद करना।

यह पाठ्यक्रम शिक्षा प्रणाली की अवधारणा, उसके कार्य करने के तरीके शालेय प्रणाली में विभिन्न स्तरों की भूमिका और कार्य को समझने तथा शालेय पाठ्यक्रम से इनके संबंधों को स्थापित कर पाने तथा कथा की प्रक्रियाओं पर इन सबके प्रभाव को समझ पाने में छात्राध्यापकों की मदद करेगा।

इकाईयां

क्रमांक	इकाई	विषय	टंक
1	1	भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रिया (Structure and process of the Indian Education System)	15 अंक
2	2	शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड (School effectiveness and school standards)	15 अंक
3	3	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन (School Leadership and Management)	15 अंक
4	4	शिक्षा में बदलाव –सुगमता (Change Facilitation in Education)	10 अंक
5	5	शिक्षक विकास की समझ (Understanding Teacher Development)	15 अंक
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई–1 भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाएँ

Structure and processes of the Indian Education System

- विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के अन्तर्गत शालाओं के प्रकार।
- शैक्षिक पदाधिकारियों की भूमिका और जवाबदेही।
- शाला और सहयोगी संगठनों के मध्य संबंध।
- शालेय प्रबंधन को प्रभावित करने वाली शिक्षा नीतियों की समझ और व्याख्या।
- शालेय संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबंधन क्या है? शालेय संस्कृति निर्माण में शालेय गतिविधियों जैसे प्रार्थना सभा, वार्षिक उत्सव इत्यादि की क्या भूमिका है?

इकाई–2 शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड

School effectiveness and school standards

- शालेय प्रभावशीलता; क्या है, इसको कैसे मापेंगे?
- शिक्षा के मानदण्डों की समझ और उनका विकास।
- कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षक।
- समावेशित शिक्षा की पाठ–योजना, कक्षा–व्यवस्थापन की तैयारी और समावेशी शिक्षा।
- कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण तथा कक्षा में बहु–प्रज्ञता स्तर।

इकाई–3 शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन

School Leadership and Management

- प्रशासनिक नेतृत्व।
- समूह नेतृत्व।
- शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व।
- परिवर्तन के लिए नेतृत्व।
- बदलाव प्रबंधन।

इकाई–4 शिक्षा में बदलाव–सुगमता

Change facilitation in Education

- सर्वशिक्षा अभियान (SSA) के अनुभव।
- शिक्षा में समानता।
- बालिका शिक्षा–प्रोत्साहन और योजनाएँ।
- शैक्षिक एवं शालेय सुधार के मुद्दे।
- शिक्षा में परिवर्तन–तैयारी एवं सुविधा/सुविधा सेवा।

इकाई–5 शिक्षक विकास की समझ
Understanding Teacher Development

- शिक्षक–विकास, शिक्षक–शिक्षा और शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधारणा।
- शिक्षक का विकास, छात्र, प्रबंधन एवं समुदाय पर प्रभाव।
- भारत में शिक्षक–शिक्षा के विकास का एक संक्षिप्त परिचय।
- वैश्विक परिदृश्य में शिक्षक शिक्षा का परिवर्तित होता स्वरूप।
- पूर्व सेवाकालीन एवं सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा : अवधारणा, प्रकृति, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र (Scope)।
- शिक्षक–शिक्षा प्रणाली के विषय में विभिन्न आयोगों और समितियों की अनुशंसाएं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसके POA का शिक्षक–शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव।
- IASE, DIET तथा CTE की भूमिका और कार्य।
- UGC, NCERT, NCTE, NUEPA, SCERT आदि संस्थाओं का नेटवर्किंग, कार्य और भूमिका।

सत्रगत कार्य (Assingment) कोई तीन

इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक कार्य इस तरह से निर्धारित किया गया है, जो छात्राध्यापकों को कक्षा की चर्चाएँ और वास्तविक जमीनी अनुभवों (कक्षा शिक्षण) के बीच सम्बन्ध स्थापित करने और बदलाव के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को समझ पाने में सहायता करें।

1. विद्यालय की संस्कृति और संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कम से कम दो शालाओं में आयोजित होने वाली गतिविधियों का अवलोकन एवं रिर्पोट प्रस्तुत करना।
2. बालिका शिक्षा के लिए शासकीय प्रयास और उन प्रयासों का विद्यालय स्तर पर लागू करने की स्थिति का आकलन करते हुए रिर्पोट बनाए।
3. सर्वशिक्षा अभियान से शालेय शिक्षा में आये परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।
4. शाला और उनके सहयोगी संगठन के मध्य आपसी सम्बधों से शाला प्रबंधन का प्रभाव– एक रिर्पोट तैयार कीजिए।
5. एक आदर्श विद्यालय के मापदण्ड क्या होना चाहिए? आलेख तैयार करें।
6. नेतृत्व बदलते ही प्रबंधन का बदलाव पर अपने अनुभव के आधार पर रिर्पोट तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ Mode of Transaction

- चुने गए आलेखों को ध्यान से पढ़ना और उन पर चर्चा करना।
- शालेय प्रक्रियाओं का अवलोकन करना और उनके दस्तावेज तैयार करना।
- शैक्षिक भ्रमण : नवाचार केन्द्रों व विविध प्रकारों के स्कूलों का भ्रमण।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मजूमदार, एस. – अधोसंरचना एवं शिक्षा प्रशासन
2. बत्रा, एस. (2003)– शालेय सहयोग के लिए शाला निरीक्षण
3. आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन (2005)
4. लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012)– हिन्दी अंक 4 स्कूल नेतृत्व अजीम प्रेमजी विश्व विद्यालय प्रकाशन
5. मुखोपाध्याय, मर्मर– शिक्षा में संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन ।
6. शिक्षा में नये आयाम – प्रकाशक राज्य शिक्षक प्रशिक्षक मण्डल म.प्र. भोपाल संस्करण (1993)
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Proficiency in English
(D.El.Ed Second year)
Question Paper-15

Maximum Marks : 50

External : 25
Internal : 25

(Rationale and Aim) :– This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student -teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Specific Objectives

- To strengthen English language proficiency of the student teacher.
- To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
- To enable students to link this with pedagogy.
- to re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

  This Course will attempt to use a variety of resources, takes and activites to enable the student-teacher to develop/increase her proficiency in English. The Focus will not be on learning and memorising aspects of grammer and pure linguistics. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning to link it with pedagogical strategies.

Unit-wise division of marks

Unit S.No.	Unit Name	Total
1	Status of English in India	3
2	Listening & Speaking	5
3	Reading	5
4	Writing	5
5	Vocabulary & Grammar	7
	Internal	25
	Total	50

The theory paper will comprise of the five units-

Unit 1- Status of English in India

- English around us
- English as associated official language in multicultural India.
- English as second/foreign language

Unit 2- Listening & Speaking.

- Listening with comprehensive – simple instructions, public enhancements telephone convesation, radio/TV.
- Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role-play, interaction radio instruction (IRI) programms
- Using role play, drama, story telling, poems, and songs as a pedagogical tool.
- Listining to oral discourses (speech, discussion, news, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)
- Producing oral discusses (speech, discussion, news sport, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)

Unit 3- Reading.

- Skills of reading, skimming, seaming, extensive and intensive reading, reading about silent reading.
- Reading for global and local comprehension.

- Critical reading – process postultes and stratigres.

Unit 4- Writing.

Writing text and identifying their features. Texts may include discriptions, conversation, narratives, biographical sketches, plays, poems, letters, reports, reviews, notices, adverts, prochures etc.

- Editing text written by one self and others.
- Error analysis

Unit 5- Vocabulary & Grammar

- Synonyms, antonyms, homophones, homographs, homonyms, phrasal verbs, idioms.
- Word formation enrichment of vocabulary abbreviation
- Type of sentences (simple, complex and compound)
- Classification of clases based on structure and function
- Voice, narration.

Assignment

The internal assessment will be done on the following two sub-sections-

A. **Suggested Activities for Active learning**. -Any two

- Group discussions
- Talk for learning
- Speech, Debate
- Short Essay
- Organising listening and speaking activities.
- Giving and asking for feedback during or after oral discusses like speech, discussions, news reports, sports commentary, interviews etc)
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Reading different types of texts
- Organising reading activities like reaching clubs, speed reading competitions
- Writing individually and refining through collaboration
- Comerting one form of text into another eg a narrative text into dialogue, paraphrasing
- Writing different indings to stories
- Re-teling a story from a different characters perspective
- Reading passages and analyzing the distribution of type of sentences
- Developing a short essay in collaboration
- Arranging jumpled sentences in proper sequence

B. **Suggested ICT activities**. Any-2

- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Download and transfer to smart phone any three audio clips of speeches, discussions, interviews etc.
- Search for websites that support listening and speaking
- Search for articles on different reading strategies.
- Search and download short videos on various reading activities as competitions.
- Search for websites which provide free or open source content such as storus, palms, play etc.
- Download and format for printing atleast three varities of writing texts (eg prose, poetry, drama etc)
- Downloading atleast one vocabulary games in a smart phone/tab
- Searching websites which promote grammar activities
- Searching websites which promote vocabulary activities
- Preparing digital presentation of a language game

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar & actual classroom teaching.

Referances

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework,2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi. Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ in OER in Vedio)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

योग शिक्षा

Yoga Education

(प्रश्नपत्र–16)

पूर्णांक–50

सैद्धान्तिक–25

प्रायोगिक–25

1- औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

आज मानव के ज्ञान में अपार वृद्धि के साथ–साथ तीव्र गति से अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आधुनिक विज्ञान तथा प्रायोगिकी ने जीवन के पहलु का प्रभावित किया है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के सूक्ष्मतम रहस्य को जानने में सफलता प्राप्त कर ली है। आज व्यक्ति के पास अनेकानेक सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध है, लेकिन दुःख की बात यह है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य खोता जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य होता है । यह सब उत्तम हो इसके लिए शरीर का संचालन जरूरी है। योग से तन के साथ मन भी स्वस्थ होता है।

डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये। जिससे बच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्दण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य बन सके।

विशिष्ट उद्देश्य (Specifice Objective)

1- छात्राध्यापकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।

2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।

3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।

4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।

5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।

6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।

7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।

8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।

9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों का व्यवहार में लाना।

10. पतंजलि, अरबिन्दो व भागवद् गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तर्दृष्टि विकसित करना।

11. योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना।

12. योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अर्न्तदृष्टि प्राप्त करना।

इकाईवार अंकों का विभाजन

सरल क्र.	इकाई का नाम	टंक
1	योगाभ्यास के सिद्धांत	7
2	प्राणायाम	8
3	बन्ध, मुद्रा एवं शुद्धि क्रियायें	5
4	भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान	5
	आंतरिक अंक	25
	कुल अंक	50

इकाई 1 – योगाभ्यास के सिद्धांत

आसन की परिभाषा एवं वर्गीकरण, आसन करते समय रखने वाली सावधानियाँ, आसनों का वर्गीकरण– ध्यानात्मक आसन, विश्रामात्मक आसन, शरीर सम्वर्धनात्मक आसन, खड़े होकर किये जाने वाले आसन, बैठकर किये जाने वाले आसन, पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, सूर्यनमस्कार का अर्थ, विभिन्न स्थितियाँ एवं लाभ।

इकाई 2 – प्राणायाम

प्राणायाम का अर्थ एवं प्रकार, पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अर्थ, प्राणायाम के अभ्यास में पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अनुपात, प्राण के भेद, मुख्य प्राण एवं उपप्राण तथा उनका परिचय (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) उपप्राण– नाग, कूर्म कृंकल, देवदत्त, धनन्जय) प्राणायाम के अभ्यास में रखी जाने वाली सावधानियाँ।

इकाई 3 – बन्ध, मुद्रा एवं शुद्धि क्रियायें

बंध का अर्थ, प्रकार लाभ (जालंधर बंध, उड्डियान बंध एवं मूलबंध)

मुद्रा का अर्थ, प्रकार एवं लाभ (चिनमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, ब्रह्ममुद्रा, योगमुद्रा, अश्वनीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, अपानमुद्रा, पृथ्वीमुद्रा)

शुद्धि क्रियाओं के प्रकार, अभ्यास की विधि, लाभ तथा आवश्यक सावधानियाँ (धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक एवं कपालभाँति)

इकाई 4 – भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान

महर्षि वशिष्ठ, महर्षि पतंजलि, आदिशंकराचार्य, गुरु गौरखनाथ, योगी भर्तृहरि, स्वामी शिवानन्द, स्वामी कुवल्यानन्द, स्वामी विवेकानन्द।

सत्रगत कार्य (Assignment)– कोई तीन

योग अभ्यास और गतिविधियाँ

1. अपने साथियों के समूह को प्राणायाम का अभ्यास कराना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।
2. योगाभ्यास करने वाले व्यक्तियों का सर्वेक्षण करना और उनसे प्रश्नावली के माध्यम से एक रिपोर्ट तैयार करना।
3. ध्यान की किसी एक विधि को सीखना उसका अभ्यास करना। पन्द्रह दिन बाद अपने अनुभवों पर एक प्रतिवेदन लिखना।
4. किन्ही तीन विद्यालयों का भ्रमण कर, शालेय योग प्रतियोगिता पर रिर्पोट तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ (Mode Of Transaction)

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रों का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

सुझावात्मक संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पातंञजलि योग प्रदीप – स्वामी ओमकारानन्द – गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य– आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम् – आचार्य उदयजी शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञजल योग सार – डॉ. साधना, दौनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण
(पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के लिए)
Pedagogy of Environmental Studies
(for Early Primary and Primary)
(प्रश्न पत्र – 17)

पूर्णांक	–100
बाह्य मूल्यांकन	– 70
आंतरिक मूल्यांकन	– 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and Aim)

पर्यावरण अध्ययन चारों ओर के व्यापक व स्थानीय परिवेश के प्राकृतिक, मानवीय, सामाजिक व सांस्कृतिक आयामों को खुद से अन्वेषण व पड़ताल कर समझने पर जोर देता है। ये विविध कौशलों के द्वारा सक्रिय रूप से सीखने– सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ने का माहौल प्रदान करने व समीक्षात्मक व जिम्मेदार प्रवृत्ति विकसित करने के अवसर देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और बाद में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 एवं 2005 व आंध्रप्रदेश के विज्ञान के पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2011 ने पर्यावरण अध्ययन को विशेष महत्व देते हुए शालेय शिक्षा में शामिल करके इस विषय को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरणीय शिक्षा से मिलकर बने एक समग्र क्षेत्र को पर्यावरण अध्ययन के रूप में परिकल्पित किया गया है, और यह बालकेन्द्रित है।

इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा में वर्तमान चुनौतियों से जूझने के लिए छात्राध्यापकों को विषय की प्रकृति व विषयवस्तु के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पहलुओं में दक्ष किया जा सके। पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण करने वाले शिक्षकों को इस तरह तैयार करना कि वे विषय के दार्शनिक एवं ज्ञान मीमांसीय (expistemological) आधार समझते हुये इस विषय से जुड़ी विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान, एवं पर्यावरणीय अध्ययन की अवधारणाओं को कक्षा शिक्षण के दौरान सिखा सकें। कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक इन विषयों की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक समझ स्वयं प्राप्त करते हुये अपनी पाठ्योजनों का स्वरूप इस तरह से तैयार करेंगे कि उसमें बच्चों के विचारों को, अनुभवों को एवं उनकी भागीदारी को बढ़ाने के पर्याप्त अवसर होंगे। यह कोर्स यह अवसर देगा कि छात्राध्यापक उन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए भी तैयार रहेंगे जिसमें यह छात्र–छात्राओं के अवधारणाओं संबंधी भ्रम एवं उनकी परिवेशीय समस्याओं की पहचान करते हुए उन्हें दूर करने की समझ बनायेंगे एवं जिम्मेदार नागरिक बनने की ओर अग्रसर कर सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम बाल विकास विषय के साथ मिलकर यह समझने में मदद करेगा कि बच्चे अपने भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के प्रति गहरी समझ किस तरह विकसित करते हैं एवं यह अंतःदृष्टि उनकी कक्षा में शिक्षण प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाएगी।

इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो पर्यावरण अध्ययन के दार्शनिक व ज्ञान मिमांसीय आधारों को समझ सकें और इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा के समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में समझ सकें। पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को कक्षा में लाने के लिए पर्याप्त मौके भी उपलब्ध कराए गये हैं। गतिविधियों से सीखने के अनुभवों को स्थान देने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। बच्चों को केन्द्र में मानकर चलने वाली इस व्यवस्था में आकलन को लेकर भी समझ में काफी बदलाव आए हैं और इस पाठ्यक्रम से अपेक्षा है कि छात्राध्यापक इन बदलावों को समझकर अपनी कक्षाओं में अलग–अलग चर्चाएँ एवं गतिविधियाँ कराने के लिये तैयार हो सकेंगे। उनकी भूमिका को अब तक मार्गदर्शक के रूप में देखा जा रहा है जो समय–समय पर उचित प्रश्न पूछ कर अपने अनुभवों से कुछ नया जोड़कर या ऐसे ही किसी और तरीकों से बच्चों को उनके ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सहयोग करेंगे।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- छात्राध्यापक को पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र को समझने एवं पाठ्यचर्या के विभिन्न दृष्टिकोण को आत्मसात करने में मदद करना।
- छात्राध्यापक एक सुविधादाता के रूप में बच्चों से विज्ञान व पर्यावरण से संबंधित जिज्ञासाओं पर सवाल करना तथा इस विषय में चर्चा करने के लिए प्रेरित करना।
- करके सीखने के दृष्टिकोण पर आधारित प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–5 तक) की कक्षायोजना पाठयोजना का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उपयुक्त–बालकेन्द्रित, अनुभव और गतिविधि आधारित तरीकों के लिए तैयार करना जिसमें शिक्षण बालकेन्द्रित, अनुभव, गतिविधि आधारित हो और जिससे पर्यावरण अध्ययन के कौशलों व दक्षताओं का विकास हो सके।
- छात्राध्यापकों को बच्चों के सीखने की गति के आधार पर विभिन्न तरीकों से आकलन करने के लिए तैयार करना।

3. इकाई अध्ययन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	टंक
1	पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ	10
2	बच्चों के विचारों को समझना	15
3	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन	15
4	पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी	10
5	पाठ्यपस्तक एवं शिक्षण विधियां	10
6	कक्षा योजना एवं मूल्यांकन	10
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई 1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ (Concept of EVS)

पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का हिस्सा बनने के संदर्भ में इसका विकासक्रम।

- एकीकृत रूप में पर्यावरण अध्ययन : विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा से ली गयी समझ।
- पर्यावरण अध्ययन पर विविध दृष्टिकोण, ''प्राशिका'' कार्यक्रम (प्राथमिक शिक्षा में ''एकलव्य'' का नवाचारी प्रयोग), एन सी एफ (NCF) 2000, एन सी एफ (NCF) 2005।

इकाई 2 : बच्चों के विचारों को समझना (Understanding Children's Ideas)

- प्राथमिक स्तर के बच्चों के ज्ञान की प्रकृति एवं सीमाएं ।
- बच्चों में ज्ञान अर्जन की विधियां।
- स्थान और समय की अवधारणा ।
- पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाओं में पियाजे के अनुसार परिवर्तन)।
- पाठ्यपुस्तकों सहित पाठचर्या सामग्री के विभिन्न प्राकल्पों (Sets) की समीक्षा (विश्लेषण)।

इकाई 3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन
(Teaching of EVS and Assessment)

- पर्यावरण अध्ययन में प्रक्रियाएं : प्रक्रिया कौशल–सामान्य प्रयोग, अवलोकन, वर्गीकरण,समस्या समाधान, परिकल्पना रचना, प्रयोगों का अभिकल्प तैयार करना, परिणामों का अभिलेख, आंकड़ों का विश्लेषण, पूर्वानुमान, परिणामों की व्याख्या एवं अनुप्रयोग।
- नक्शा व चित्र में अंतर करना, नक्शा पढ़ना।
- पूछताछ के तरीके : गतिविधियां, परिचर्चा, समूह कार्य,भ्रमण, सर्वेक्षण, प्रयोग आदि।
- बच्चों के विचार व उनके अनुभव सीखने के साधन के रूप में उपयोग करना।
- कक्षा शिक्षण में शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका।
- पर्यावरण अध्ययन – भाषा और गणित का एकीकरण।
- कक्षा में सूचना संचार तकनीक (ICT) का उपयोग।
- आंकलन एवं मूल्यांकन– परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- आंकलन की विभिन्न विधियां एवं भविष्य में अधिगम के लिए आकलन का उपयोग

इकाई 4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी (Planning for Teaching EVS)

- योजना को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता।
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के कुछ उदाहरण।
- बच्चों के वैकल्पिक दृष्टिकोण को समझना।

- अवधारणा चित्र एवं थीमैटिक वेब चार्ट्स (संकल्पना अवधारणा एवं विषयगत भेद नक्शे, चार्ट्स)।
- इकाई योजना की रूपरेखा बनाना एवं उसका उपयोग।
- संसाधन इकट्ठा करना।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग।
- दृश्य श्रव्य एवं इलेक्ट्रॉनिक सामग्री।
- प्रयोगशाला/विज्ञान किट।
- पुस्तकालय।
- सहपाठी समूह अधिगम (बच्चों की आपसी बातचीत) का उपयोग।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियां (Textbooks and Pedagogy)

पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक तैयार करने के संदर्भ में मार्गदर्शक सिद्धान्तः सामाजिक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ

- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु विषयवस्तु, उपागम एवं शिक्षण विधियां– बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सुविधादाता (Facilitator) के रूप में शिक्षक
- इकाई की विषयवस्तु एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका क्रियान्वयन
- अधिगम के संकेतक एवं मापदण्ड
- प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)

- शिक्षण की तैयारी : पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- चिंतनशील (Reflective) शिक्षण एवं अधिगम की समझ
- मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, सीसीई (CCE)
- चिंतनशील (Reflective) प्रश्नों की तैयारी एवं चयन
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आंकलन, अधिगम का आंकलन, रचनात्मक मूल्यांकन एवं उसके साधन, योगात्मक मूल्यांकन, मूल्य तुलना सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर

सत्रगत कार्य

पाठयोजना निर्माण–पर्यावरण की विषयवस्तु पर आधारित पाठयोजनाएँ निर्मित होगी।

- **Inter disciplinary, Multi diciplinary approach** पर आधारित पाठयोजनाएँ
- ए.एल.एम. आधारित –पाठयोजनाएँ
- समस्या समाधान आधारित पाठयोजनाएँ, इन पाठयोजनाओं में अभ्यास के दौरान सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।
- इकोक्लब की स्थापना एवं उसके क्रियाकलापों का निर्धारण जैसे वृक्षारोपण, वृक्षों का रखरखाव इादि।
- पर्यावरणीय भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना– ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल पर।
- आसपास की खोज प्रायोजना निर्माण – जलस्त्रोत एवं उनका संरक्षण, फसलें, मिट्टी के प्रकार आदि।
- अध्यापन अभ्यास के दौरान स्टडी – सामाजिक, पर्यावरण के सुधार के संदर्भ में कुपोषित बालक, उग्र/ उद्दंड बालक।
- पाठ्यपुस्तक विश्लेषण – किसी एक पुस्तक का पाठवार विश्लेषण ।
- स्थानीय स्त्रोतों के संरक्षण हेतु गतिविधियाँ (वादविवाद, प्रहसन नाटिका आदि) तैयार करना।
- किन्हीं दो बच्चों का पर्यावरण अध्ययन में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की रिर्पोट तैयार करना।
- किसी एक कक्षा के लिए पर्यावरण विषय पर पाँच चिन्तनशील प्रश्न तैयार करना।

अंतरण की विधियां

- गतिविधिपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हुए आसपास के परिवेश के उदाहरण एवं समस्याओं पर कक्षा में चर्चा एवं स्थानीय क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाना।
- संस्थान में वर्कशाप, सेमीनार आयोजित करके छोटे–छोटे समूह कार्य कराए जा सकते हैं जैसे पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, समाचार पत्रिका का लेखन, क्षेत्र भ्रमण की रिपोर्ट का निर्माण आदि।
- छात्राध्यापको के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद एवं क्षमता संर्वधन के लिए वाद–विवाद,परिचर्या, ड्राइंग, पेटिंग, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण , गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना जैसे– पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरूकता हेतु– वादविवाद।
- अपशिष्ट के प्रकार एवं प्रबंधन –प्रोजक्ट कार्य।
- प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण एवं नियंत्रण– सर्वे।
- भोज्य पदार्थो का स्वास्थ्यवर्धक संयोजन– चार्ट निर्माण, प्रश्नोत्तरी।
- कुपोषित बालक एवं सीखने की गति – केस स्टडी।
- फसलें / कृषि हेतु मिट्टी–पानी आदि अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियाँ– भ्रमण, सर्वे।
- प्राकृतिक आपदाएँ एवं जागरूकता– फिल्म, विडियो क्लिपिंग।
- अम्लीय वर्षा ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव– निबंध, वाद–विवाद ।

- सांस्कृतिक पर्यावरण – एकांकी, नृत्यनाटिका।
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शिक्षाविदों / समाजशास्त्रियों, पर्यावरणविदों के योगदान –तात्कालिक भाषण, चर्चा।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथों की सूची

- पर्यावरणीय पाठ्य पुस्तकें (प्राथमिक स्तर)
- दिगन्तर जयपुर का साहित्य
- एकलव्य मध्यप्रदेश का साहित्य संगति, एवेही एवेकस मुंबई
- एनसीईआरटी (2007) एन्वायरमेंटल स्टडीज–लुकिंग एराउन्ड Class-III-V नई दिल्ली
- एनसीएफ (2005) एवं एनसीटीई (2009) दिल्ली
- पर्यावरणीय अध्ययन– ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल)
- विज्ञान शिक्षण का आयोजन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कालेज, भोपाल)
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण – प्रो. शर्मा, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

सामाजिक विज्ञान शिक्षण

Pedagogy of Social Science

(वैकल्पिक –प्रश्न पत्र–18)

पूर्णांक –100

बाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

औचित्य एवं उद्देश्य (Relationale and Aim)

सामाजिक विज्ञान विषयों का शिक्षण उच्च प्राथमिक कक्षाओं से प्रारम्भ होकर दसवीं कक्षा तक किया जाता है। इसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। यह विषय अन्य विषयों से भिन्न है क्योंकि इसके अन्तर्गत हम न केवल समाज का वैज्ञानिक तरीकों से अध्ययन करते हैं, बल्कि एक आदर्श सामाजिक संस्था को परिकल्पित करते हैं। वास्तव में, सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आधुनिक समाज का पुनरावलोकन हमें सामाजिक परिघटनाओं को समझने और नये समाज की स्थापना करने के रास्ते ढूंढने में मदद करता है। इस विषय की प्रकृति भविष्य के समाज की कल्पना से जुड़ी है। अतः इसके शिक्षण में विविध प्रकार के सामाजिक दखल भी शामिल किये जाते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि इस विषय के द्वारा छात्राध्यापक किसी समाज के निर्माण में इन दखलों की भूमिका को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम में छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान की विशेषताओं को समझने के साथ इतिहास, भूगोल, सामाजिक–आर्थिक और सामाजिक–राजनीतिक जीवन की प्रकृति को भी समझ सकेंगे। स्कूली स्तर पर सामाजिक विज्ञान में क्या पढ़ाया जाना चाहिए, और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, इस पर पर्याप्त शोध और विमर्श हुए हैं, जिनको छात्राध्यापकों को जानना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के कक्षा शिक्षण के अनुभव और उनसे मिली सीख भी अध्ययन का विषय है।

छात्राध्यापकों से यह भी अपेक्षा है कि वे पाठ्यपुस्तक की अवधारणा से परिचित होने के लिए अन्य सन्दर्भ सामग्रियों का भी उपयोग करें। जिससे वे पाठ्यपुस्तकों और उनकी अवधारणाओं से परिचित सकें।

सामाजिक अध्ययन विषय में बच्चों का आकलन करना कठिन है, क्योंकि बच्चों से अपेक्षा है कि वे पाठ के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को याद करके बताने के बजाय अपने अनुभव, विचार व धारणाओं को प्रस्तुत करें। इस समय में मूल्यांकन के क्या उपाय और प्रक्रिया होगी, को भी इस पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

एक स्कूली विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु उसकी प्रकृति और उद्देश्यों पर आधारित होती है। यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को विषयवस्तु के विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित कराता है। इसे प्राकृतिक और दिया गया समझने के बजाय यह छात्राध्यापकों को इन विषयों के विभिन्न

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों में इन विषयों की समझ परिलक्षित होती है। यह पूछना और सुझाता है कि किस प्रकार सामाजिक विज्ञान हमारे आसपास के समाज और सामाजिक वास्तविकताओं को समय, स्थान, संस्थानों, प्रक्रियाओं आदि की समालोचनात्मक समझ विकसित करता है।

इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र के विविध दृष्टिकोण इस कोर्स का आधार बने हैं जिससे यह समझा जा सके कि यह विषय अलग–अलग तरीकों से समझा जा सकता है और इसके उद्देश्य ऐतिहासिक व सामाजिक होते हैं। पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण छात्राध्यापकों को यह समझने में मदद कर सकता है कि किस तरह समाज, बच्चे व सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण इन दस्तायेजों को किस तरह आकार देते हैं वे इनका अंतरण किस तरह से किया जाता है। बच्चे सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को किस तरह ग्रहण करते हैं, व पाठ्यपुस्तकों की विधियाँ इस प्रक्रिया में सहायक होती है या बाधक बनती है इस पर चिंतन करने से छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण और शिक्षणशास्त्र के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)–

- इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के आधार पर समाज को समीक्षात्मक रूप से समझने और विश्लेषण करने का ज्ञान कौशल विकसित करना।
- आंकड़े एकत्र करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का कौशल विकसित करना।
- सामाजिक विज्ञान के स्कूली पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों को समीक्षात्मक दृष्टि से विश्लेषण करना।
- पाठ्यक्रम के अंतरण के लिए इस तरह की विधियों को जानना और उपयोग करना जो बच्चों में सामाजिक घटनाओं में जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा समाज व सामाजिक संस्थाओं और उनके क्रियाकलापों को समीक्षात्मक व विचारात्मक दृष्टि से व्यक्त करने की क्षमताएं विकसित कर सके।
- स्वतंत्रता, समानता व न्याय के मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को समझकर विभिन्नता और विविधता का सम्मान कर सकें और समाज में उनके लिए मौजूद चुनौतियों को समझ सकें।

इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जिन्हें सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व ज्ञानमीमांशीय आधरों को समझ सकें ओर इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में समझ सकें। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को सीन उदेने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। इस पेपर में विज्ञान व सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु को शामिल किया गया है। इस पेपर में छात्राध्यापकों को यह अवसर मिलेगा कि वे बच्चों के विचारों को समझने के साथ–साथ अपनी धारणाओं व पूर्वाग्रहों को भी परख सकें व अच्छी समझ की ओर बढ़ सकें।

वधन की इकाईयां

रल क्र.	इकाई का नाम	vad
1	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	10
2	सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचचर्या एवं महत्वपूर्ण अवधारणायें	15
3	बच्चों की समझ, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियायें तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियां	15
4	शिक्षण शास्त्र एवं आकलन	10
5	पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण शास्त्र की समझ	10
6	कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन	10
	आंतरिक	30
	कुल योग	100

इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन : प्रकृति और क्षेत्र, बच्चों में उनके सामाजिक संदर्भ और वास्तविकताओं की समझ विकसित करने में सामाजिक अध्ययन का योगदान, इतिहास की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र के संबंध में विविध दृष्टिकोण, इतिहासकार की भूमिका, इतिहास में दृष्टिकोण, स्रोत और सुबूत, नागरिक शास्त्र में यथा स्थितिवादी और सक्रियवादी/सामाजिक बदलाव का दृष्टिकोण, भूगोल के संबंध में विभिन्न नजरिये, सामाजिक विज्ञान को व्यवस्थित करने के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण, विषय केंद्रित, मुद्दा केंद्रित, एकीकृत सामाजिक अध्ययन एवं अर्न्तविषयक सामाजिक विज्ञान।

इकाई 2 : सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचचर्या एवं महत्वपूर्ण अवधारणायें

बदलाव एवं निरन्तरता की समझ, कारण एवं प्रभाव, समय संबंधी दृष्भिकोण एवं कालक्रम, निम्नांकित के माध्यम से सामाजिक–स्थानिक अंर्तक्रिया :–

1. समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण समुदाय एवं समूह
2. सभ्यता : इतिहास, संस्कृति
3. राज्य : अधिकार, राष्ट्र, राष्ट्र–राज्य एवं नागरिक
4. क्षेत्र या अंचल : संसाधन, स्थान और लोग
5. बाजार : विनिमय

इकाई 3 बच्चों की समझ, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियायें तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियां :

बच्चों का संज्ञानात्मक विकास एवं बच्चों में उनकी उम्र एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में माध्यमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणा का निर्माण, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के संदर्भ में इन कारकों का महत्व, अवधारणाओं की समझ के बारे में बच्चों की केस स्टडीज, बच्चे, सामाजिक विज्ञान के ज्ञान का निर्माण एवं कक्षा में अर्न्तक्रिया, सामाजिक विज्ञान के लिए समुदाय एवं स्थानीय स्रोतों सहित विविध शिक्षण–अधिगम सामग्री, विषय के संबंध में नजरिया क्या और कैसा है और वे किस तरह बच्चों की समझ बनाते

हैं, इसे समझने के लिए सामाजिक विज्ञान की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना (केस स्टडीज के उपयोग, तस्वीरों, कहानियों/आख्यानों, संवाद और बातचीत, प्रयोगों, तुलना, अवधारणाओं के क्रमिक विकास आदि के आधार पर अवलोकन करें)। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के शिक्षण को समझने और उसका समालोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए कक्षाओं का अवलोकन।

इकाई 4 : शिक्षण शास्त्र एवं आकलन

शिक्षण विधियां : सामाजिक विज्ञान में अनुमान/खोज पद्धति, प्रॉजेक्ट विधि, आख्यानों का उपयोग, तुलना, अवलोकन, संवाद एवं परिचर्चा, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में आंकड़े, इसके स्रोत एवं साक्ष्य की अवधारणा, तथ्य एवं मत के बीच अंतर, पूर्वाग्रहों एवं झुकावों को समझना, तार्किक चिंतन के लिए निजी/प्रायोगिक ज्ञान का इस्तेमाल, सामाजिक विज्ञान में जानकारी के पुनर्स्मरण पर आधारित मूल्यांकन पद्धति का प्रभुत्व, अधिगम का मूल्यांकन करने के वैकल्पिक तरीके, मूल्यांकन के आधार, प्रश्नों के प्रकार, खुली किताब परीक्षा का उपयोग आदि।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण शास्त्र की समझ

- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु दर्शन एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए विषयवस्तु, नजरिया एवं शिक्षण विधियां–बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सूत्रधार के रूप में शिक्षक।
- इकाई के विषय एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका निहितार्थ।
- अधिगम के अकादमिक मापदण्ड एवं संकेतक।
- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या के प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन।

इकाई 6 : कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन

- शिक्षण की तैयारी : सामाजिक अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- आकलन और मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता और महत्व
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उसके साधन, योगात्मक आकलन, भारांकन सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।

सत्रगत कार्य (Assignment)- (कोई तीन)

- प्रामाणिकता की दृष्टि से किसी ऐतिहासिक फिल्म/धारावाहिक या उपन्यास की समीक्षा। प्रामाणिकता के आकलन के लिए फिल्मों, किताबों, अखबारों के आलेख, प्रदर्शनियों और संग्रहालयों जैसे स्रोतों का उपयोग। ''तथ्यों'' की जटिल प्रकृति, उसके गठन और ''मत'' से उसके अंतरों को समझना।
- किसी स्थान को अपने शिक्षण संस्थानों से दूरी और दिशा के संदर्भ में नक्शे में अंकित करना। नक्शे ऐतिहासिक स्थलों, बैंकों, अन्य संस्थानों, स्थानीय बाजार एवं रुचि के अन्य स्थानों को अंकित करें। स्थानीय इतिहास की जानकारी लेने एवं उस जगह की खासियत जानने के लिए वहां के रहवासी एवं अन्य लोगों से बातचीत भी करें। उस जगह पर स्थित विविध संस्थानों के बीच के संबंधों को भी देखने समझने की कोशिश करें।
- वर्ष 1950 के एवं आजकल की कुछ पुस्तकें, फिल्में, कार्टून्स, पत्रिकायें, जर्नल्स इकट्ठा करें। किसी आम व्यक्ति से संबंधित मुद्दों को निकालने के लिए सावधानीपूर्वक उनका अध्ययन करें। उन बदलावों

को रेखांकित करें जो किसी आम व्यक्ति के सरोकारों और जिन्दगी में देखे जा सकते हैं। क्या इन बदलावों के पीछे के कारण, हमारे देश की अर्थव्यवस्था, राजनीति, इतिहास और सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में तलाशे जा सकते हैं? अपनी समझ को रिपोर्ट/कविता/कोलाज/आख्यान/नाटक या अन्य किसी माध्यम में, जिसमें आप चाहें, प्रस्तुत करें।

- फील्ड विजिट के माध्यम से किसी झुग्गी बस्ती के बारे में उसकी अर्थव्यवस्था, गुजर बसर, राजनीति एवं ऐतिहासिक स्मृतियों के अर्थ में समझ बनायें। उनकी वर्तमान चिंताओं और समस्याओं की प्रकृति को समझने के लिए इन कारकों के बीच संबंध बनायें।
- किन्हीं दो उत्पादों के बारे में उनके कच्चा माल से लेकर अंतिम रूप तक की जानकारी खंगालें। उसे अंतिम व उपयोग लायक स्थिति तक लाने के लिए जो प्रक्रियायें होती हैं उनका अध्ययन करें। इस बात का अध्ययन करें कि किस तरह भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और इतिहास के विविध कारकों ने इन प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। इस बात को भी देखें कि उनके बीच क्या अंतर्संबंध हैं।
- किसी विशिष्ट सामाजिक विज्ञान विषय, घटना, तिथि या स्थिति के इर्द–गिर्द एक मौखिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रॉजेक्ट बनायें। साक्षात्कार और बातचीत के माध्यम से लोगों के विचारों और मतों को समझें और उन्हें जगह व सम्मान दें। इन विवरणों को अन्य स्त्रातों से तुलना करके उनकी विश्वसनीयता का विश्लेषण करें। इस प्रॉजेक्ट का उपयोग, इतिहास के बारे में उपलब्ध बहुल मतों को समझने में करें। साथ ही इस बात को भी समझें कि कैसे कुछ मत, दूसरे अन्य मतों को दरकिनार कर हावी हो जाते हैं।
- लोगों के पास होने वाले विभिन्न प्रकार के वाहनों का विश्लेषण कर किसी समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों का अध्ययन करें। जेण्डर एवं सामाजिक–आर्थिक मापदण्ड से इसके संबंधों की पड़ताल कीजिए। समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों में समय के साथ आये बदलावों को चिन्हित कीजिए। ऐतिहासिक नजरिये से दिखाई देने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करें। साथ ही परिवहन के विविध प्रकारों के आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का भी आकलन कीजिए।
- देखें कि किस तरह कार्टून्स, टिकट, मुद्रा, अखबार, पत्रिकायें, डॉक्युमेन्टरीज, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, धारावाहिक, उपन्यास एवं इसी तरह की तमाम चीजें, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयोग होती है।
- किसी एक पिछड़ी बस्ती का सामाजिक व आर्थिक तथ्यों की जानकारी लेते हुए आज के संदर्भ में उनकी समस्याओं का अध्ययन एवं सुझावात्मक समाधान।
- अपनी संस्था से किसी बस्ती का नक्शा तैयार करना। प्रमुख सुझायात्मक बिन्दु–स्थिति, स्थान, बैंक, बाजार, संस्था, मंदिर/मस्जिद,/चर्च/गुरूद्वारा इत्यादि।
- सामाजिक विज्ञान के किसी विषयांश को लेकर तिथि एवं घटनाओं के आधार पर प्रोजेक्ट तैयार करना। अन्य स्त्रोतों से इन तथ्यों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता ।
- सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में डाक टिकट, मुद्रा, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, डाक्यूमेन्ट्री, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, सीरियल किस प्रकार उपयोगी है, खोजकर स्पष्ट करना।
- पाठ्य पुस्तक समीक्षा– भौतिक स्वरूप, वर्तनी, चित्र एवं मानचित्र, अवधारणात्मक बिन्दु आदि।
- प्रश्न पत्र का विश्लेषण।

अंतरण की विधियां (Mode of Transction)

1. चर्चा विधि का उपयोग करते हुए
2. कार्यशालाओं में विशेष सामाजिक संदर्भो पर बातचीत कराना
3. योग भ्रमण द्वारा

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण, माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल
- सामाजिक विज्ञान (विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ) आपरेशन क्वालिटी– एस.सी.ई.आर.टी.
- एस.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें।
- राष्ट्रीय फोकस समूह (एन.सी.एफ.) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आधार पत्र।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Batra, P. (ed.)(2010). Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges, New Delhi: Sage.
- Chakravarty, U. (2006). Everyday Lives, Everyday Histories: Beyond the Kings and Brahmanas of 'Ancient' India', New Delhi: Tulika Books, Chapter on: History as Practice: Introduction, 16-30.
- George, A. and Madan, A. (2009). Teaching Social Science in Schools: NCERT's New Textbook Initiative. New Delhi: Sage.
- Kumar, K. (1996). Learning From Conflict. Delhi: Orient Longman, pp.25-41, 79-80.
- NCERT, (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of Social Sciences. New Delhi: NCERT, 1-19.
- Eklavya (1994). Samajik Adhyayan Shikshan: Ek Prayog, Hoshangabad: Eklavya.
- Jain, M. (2005). Social Studies and Civics: Past and Present in the Curriculum, Economic and Political Weekly, 60(19), 1939-1942.
- NCERT Social Science Textbooks for Classes VI-VIII, New Delhi : NCERT.
- Social Science Textbooks for Casses VI-VIII, Madhya Pradesh: Eklavya.

Pedagogy of English

Second year

(Upper Primary- Optional paper)

(Optional-Question paper 18)

Maximum Marks : 100

External : 70

Internal : 30

(Rationale and Aim)

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is to give an expouses of ongoing updated method of ELT to the student teacher. The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student - teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Unit -wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Total
1.	Approaches to Teaching of English	15
2.	Pedagogical implication of SLA Theories	10
3.	Process and Planning	10
4.	Curriculum and resource material	15
5.	Classroom transaction process	10
6.	CCEAssessment	10
	Internal Mark	30
	Total	100

Unit 1- Approaches and methods to teaching of English.

- Active Learning Methods
- Congnitive and constructivist approach : nature and role of learners different kinds of learners.
- Teaching mutigrade classess multilevel classess.
- Socio- Psychological factor (attitude, aptitude, motivation, level of aspiration)
- From knowledge based approach to skill based approach.

Unit 2 - Pedagogical Implications of SLA Theories.

- Second language acquisition theories
- Interaction in second language in classroom, from theory to practice
- the pedagogy of reading.
- Discourse oriented pedagogy

Unit 3- Process and Planning.

- Characteristics of a good teaching plan
- Different processes of teaching proses, poetry, grammar.
- Constructivist situations using formats like 5 E's (Engage, Explore, Explain, Elaborats, Evaluate), and SQ4Rs (Survey, Questions, read, recite, review, reflection)

Unit 4- Curriculum and resource material:

- NCF-05 Chapter 3 3.2.2- Curriculum , 3.3.1 The curriculum at different stages
- NCF-05 Chapter 3 3.1.1- Language education 3.1.2 Home/ first/ Language or mother tongue, 3.1.3 Second Language acquisition.
- NCF-05 Chapter 2 2.3- Curriculum studies; knowledge and curriculum
- Position Paper on Language.

Unit 5- Classroom transaction process

- Role of 'talk' in the classroom to make the class more interactive.
- Development of vocabulary through pictures, flow- charts and language game.
- Dealing with textual exercises (Vocabulary, Grammar, study skills, projectwork)

Unit-6 Assessment

- CCE-Concept and procedure: Implications of Assessment- for the learner, for the Teacher and for the community, maintaining teacher's diary, record; informal feedback from the teachers; measuring progress; using portfolio for subjective assessment,
- Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE
- Attitude towords errors and mistakes in second language learning.

Mode of Transaction

The teaching would be done -

(a) Group work
(b) Work shop
(c) Seminar
(d) Actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.
- checking the generalizations and editing them individually and also through collaboration, feedback.
- critical reading of spacific areas of grammar as discussed in a few popular grammar books and reaching at conclusions.
- Survey, interview
- Group discussion on advantages of learner-centered-approach.
- Search and download steps of action research
- Prepare strategies for addressing the problems of low proficient learners
- Publishing children's products (School Magzines)
- Prepare digital presentation on recent developments in technology and language learning.
- observe open Education resource (OER) lessons on second language acquisition. Comment critically.
- Prepare teaching- learning material; low cost, no cost, using the classroom as a resource
- Prepare teaching learning- planning on prose lesson given in the text book of upper primary classes.
- Searching and downloading videos from internet on planning for teaching
- Download any grammar app
- Prepare learning outcomes on the bassis of resource material (NCF-05 Chapter 3-3.1.1- Language education)
- Review text book of English of class VIII
- Search and download NCF-05. Position Paper
- Select at least 25 vocab items from any English text book- find their pronunciation online.
- Prepare a series of dialogue on Need of English language in today scenerio and present them
- Make pictures, charts and daily routine activites using vocalbulary given in text book of class VI and present them in the class room.
- Download videos of good classroom practices

- Prepare question papers of English for class VI, VII, VIII for summative assessment of students.
- Make a digital presentation on CCE describing formative and summative assessment
- Present the above presentation in school programme.

Essential Readings

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework, 2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi. Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. – द्वितीय वर्ष
गणित शिक्षण
(कक्षा 6 से कक्षा 8 तक)
Pedagogy of Mathematices
(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

पूर्णांक – 100
बाह्य मूल्यांकन –70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

औचित्य का उद्देश्य (Relationale and Aim)

प्राथमिक स्तर पर बच्चे यह सीखते हैं कि उन्हें अपनी आस–पास की दुनिया में कार्यों को करने के लिए गणितीय ज्ञान का व्यवस्थित उपयोग किस तरह करना चाहिए। इसी समय बच्चे गणितीय ज्ञान के प्रतीकात्मक स्वरूप के संपर्क में आते हैं और यह सीखते हैं कि गणित में अवधारणाओं और प्रक्रियाओं के बीच किस तरह संबंध बनाया जाता है। गणितीय ज्ञान के अधिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे कुछ महत्वपूर्ण आयामों जैसे– अमूर्त चिंतन व सामान्यीकरण, तर्क करने के गणितीय तरीकों, संकेतों/प्रतीकों के प्रयोग की आवश्यकता आदि के बारे में जाने। समस्या समाधान के गणितीय तरीके स्थानिक संबंध व सूचनाओं से सार ग्रहण करना सीखना भी उनके लिए आवश्यक है।

यह पाठ्यचर्या गणित के मूलभूत क्षेत्रों यथा– बीजगणित, ज्यामिति व आंकड़ों के प्रबंधन को देखने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि, कौशलों के विकास और संवेदनशीलता में अभिवृद्धि के प्रयास करता है।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- गणितीय तरीकों से तर्क करने के लिए अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
- बीजगणितीय चिंतन के प्रति सजगता एवं उसे सराहने की क्षमता विकसित करना।
- ज्यामितीय अवधारणाओं की समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को सूचनाओं के साथ कार्य करने के सांख्यिकीय तरीकों एवं संबंधित गणितीय अवधारणाओं से परिचित कराना जो इस प्रक्रिया में मदद करते हैं।
- भावी शिक्षकों में बच्चों को औपचारिक गणित संप्रेषित करने से संबंधित प्रक्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं में अभिवृद्धि करना।
- भावी शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया देने जैसे कार्यों से जोड़ना जिससे वे गणितीय चिंतन के मूलभूत अंगों को समझने एवं उन्हें संप्रेषित के तरीकों में समर्थ हों।

इकाईवार अंको का विभाजन–

सरल क्र.	इकाई	विषय	अंक
1.	1.	गणितीय तर्क	15
2.	2.	बीजगणित चिंतन	10
3.	3.	व्यावहारिक अंकगणित और आंकड़ों का प्रबंधन	10
4.	4.	स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना	15
5.	5.	गणित को सम्प्रेषित करना	10
6.	6.	गणित में आकलन से सम्बन्धित मुद्दे	10
		आंतरिक अंक	30
		कुल योग	100

इकाई 1 : गणितीय तर्क

सामान्यीकरण की प्रक्रियायें, पैटर्न पहिचानना और परिकल्पना के निर्माण में सहायक आगमनात्मक तर्क (inductive reasoning) प्रक्रिया।

- गणित की संरचना : अभिगृहीत (Axioms), परिभाषाएँ, प्रमेय (Theorems)
- गणितीय कथनों (statements) की वैधता जाँचने की प्रक्रिया : उत्पत्ति (proof), प्रति–उदाहरण, अनुमान (Conjecture)
- गणित में समस्या समाधान– एक प्रक्रिया
- गणित में रचनात्मक चिंतन

इकाई 2 : बीजगणित चिंतन

- अंक पैटर्न से निकलने वाले सामान्यीकरण को अज्ञात के इस्तेमाल द्वारा अभिव्यक्त करने को समझने में मदद करने वाला अंक पैटर्न
- क्रियात्मक सम्बन्ध (Functional relations)
- चरों (variables) का प्रयोग–कब और क्यों।
- सामान्य रेखीय समीकरणों को बनाना और हल करना।
- बीजगणितीय चिंतन पर आधारित गणितीय खोजबीन/पहेली।

इकाई 3 : व्यावहारिक अंकगणित और आंकड़ों का प्रबंधन

- आंकड़ों का इकट्ठा करना, उनका वर्गीकरण और उनकी व्याख्या करना।
- संग्रहित आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण।
- प्रारंभिक सांख्यिकीय तकनीक।
- रेलवे समय सारिणी सहित अन्य समय सारिणी बनाना।
- प्रतिशत।
- अनुपात और समानुपात।
- ब्याज।
- बट्टा / छूट (Discount)

इकाई 4 : स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना

- ज्यामितीय चिंतन के स्तर– वान हील (Van Hieles)
- सरल द्विविमीय और त्रिविमीय आकृतियाँ–ज्यामितीय शब्दावली।
- समरूपता और समानता (Congruency and similarity)।
- रूपान्तरण और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- मापन और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- ज्यामितीय उपकरणों का प्रयोग करते हुए ज्यामितीय आकृतियों की रचना।

इकाई 5 : गणित को सम्प्रेषित करना

- पाठ्यचर्या और कक्षागत प्रक्रियाएँ।
- गणित के शिक्षण– अधिगम की प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका।
- गणित प्रयोगशाला/संसाधन कक्ष।
- छात्रों को उनके कार्यों में हुई गलतियों के बारे में फीडबैक देना।
- गणित से डर और असफलता से पार पाना।

इकाई 6 : गणित में आकलन से सम्बन्धित मुद्दे

- मुक्त उत्तर वाले प्रश्न (open ended questions) और समस्याएं।
- अवधारणात्मक समझ के लिए आकलन।
- सम्प्रेषण और तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन के लिए आकलन।
- गणितीय विचार को समझाने के लिए उदाहरणों एवं अन्य–उदाहरणों का प्रयोग

- तर्क के परिपेक्ष्य में पुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण
- गणितीय शब्दावली और उसके गणितीय अववोध के विकास पर स्पष्टता

सत्रगत कार्य (Assignment)

1. कम्पास यंत्र (ज्यामिति बाक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग।
2. गोला, शंकु,बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना।
3. किसी एक कक्षा में विद्यार्थियों की आयु, ऊँचाई तथा भार संबंधी आंकड़ों का संग्रह करना एवं उनका आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञात करना।
4. गणित पैटर्न
5. कागज को मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनक शिक्षण में उपयोग।
6. बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितिय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना।
    a. $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$
    b. $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$
    c. $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$
7. π के सत्यापन मॉडल तैयार करना।
8. वृत्त के क्षेत्रफल के सत्यापन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
9. अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग।
10. संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
11. किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना।
12. ज्यामिति अवधारणाओं के सत्यापान हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।
- गणित की विभिन्न अवधारणाओं के बीच जुड़ाव और सम्बन्धों को समझने के लिए भावी शिक्षकों को समूह में अवधारणात्मक ख़ाका (concept maps) बनाना चाहिए। जिससे समूह कार्य के महत्व को आत्मसात किया जा सके।
- उठाए गए मुददों के नज़रिये से सिद्धान्त को समझने के लिए पाठ्य वस्तु (जैसा कि चर्चा के रूप में सुझाव दिया गया है) को संवाद के साथ पढ़ना चाहिए।

- गणित के ज्ञान के ऐतिहासिक उदाहरणों को विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से एकत्र करना और उस पर अपनी राय व्यक्त करना।
- गणितीय मॉडल (विशेषकर ज्यामिति से संबंधित) बनाना।
- प्रस्तुति के माध्यम से शिक्षण–अधिगम की सामग्रियों को आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।
2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी.लाल
3. गणित अध्ययन –सत्संगी एवं दयाल
4. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित
5. Position paper National focus Group on teaching of mathematics
6. NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर
7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
8. वैदिक गणित –स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ
9. वैदिक गणित भाग 1,2,3, – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा
10. मापन एवं मूल्यांकन –आर.ए. शर्मा
11. राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका?
12. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

विषय : विज्ञान शिक्षण

Pedagogy of Science

(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

पूर्णांक –100
बाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ का विकास कर, गलत धारणाओं को चुनौती देने हेतु तैयार करना है एवं उन्हें विज्ञान की प्रकृति से अवगत कराना हैं। इससे वे विभिन्न पहलुओं के संबंध में अपने विचारों को निर्भय होकर व्यक्त कर सकेंगे एवं विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ स्थापित कर उनमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास कर सकेंगे। छात्राध्यापकों को ज्वलंत मुद्दों पर सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने योग्य बनाना तथा जो उनके शिक्षण में परिलक्षित हो सके।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ विकसित करना ।
- छात्राध्यापकों को विज्ञान की प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना।
- छात्राध्यापकों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ एवं उनके संज्ञानात्मक विकास करने योग्य बनाना।
- छात्राध्यापकों में विज्ञान शिक्षण एवं आकलन हेतु रणनीति निर्माण करने की समझ विकसित करना।

3. इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन	10 अंक
2	2	विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचारों को समझना	15 अंक
3	3	सभी के लिए विज्ञान (Science for all)	15 अंक
4	4	पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियों का संज्ञान	15 अंक
5	5	कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन	15 अंक
		आंतरिक अंक	30 अंक
		कुल योग	100 अंक

इकाई : 1 विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन (Recapetulation of Concepts of Science)

➢ कक्षा 1 से 8 तक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परिवेश में होने वाली निम्नलिखित घटनाओं का पुनरावलोकन एवं अन्य विषयों का विज्ञान से संबंध स्थापित करना।

- जंग क्यों लगती है?
- बादल कैसे बनते है?
- मोमबत्ती जलते समय छोटी क्यों हो जाती है?
- वनस्पति और जंतु अपना भोजन कैसे करते हैं?
- वनस्पतियों तथा जन्तुओं में पुनरुत्पादन कैसे होता है।
- पवन चक्की कैसे कार्य करती है।
- बल्ब कैसे प्रकाश देता है।

इन सब प्रश्नों के लिए छात्राध्यापक उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करेंगे, गतिविधि एवं प्रयोग करेंगे तथा अवलोकन का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखेंगे। छात्राध्यापक आपस में तथा शिक्षक–अध्यापक के साथ चर्चा करेंगे, प्रश्नों का उत्तर कैसे प्राप्त करें इस बात पर चिंतन करेंगे, जाँच करने के लिए निश्चित विधि को ही क्यों चुना गया, इन अभ्यासों को करवाते समय शिक्षक–अध्यापक सुविधादाता का कार्य करेंगे।

इकाई–2 विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचार समझना। (To Know what is science and understand the scientific thoughts, idea of children)

- विज्ञान की प्रकृति– अवधारणा, प्रक्रिया एवं उत्पाद
- विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में संबंध
- वैज्ञानिक विधि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग
- वैज्ञानिक एवं विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचार
- विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचारों का अवलोकन विश्लेषण एवं दस्तावेजीकरण।

इकाई–3 : सभी के लिए विज्ञान (Science for all)

- विज्ञान की कक्षा में लिंग, भाषा, संस्कृति एवं समानता संबंधी मुद्दे; सामाजिक एवं सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका।
- जन सामान्य तथा खेती के लिए पर्याप्त पानी की उपलब्धता पर विचार।
- हरित क्रांति और टिकाऊ खेती की विधियां।
- सूखा, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का किसानों पर प्रभाव।
- अनेक प्रजातियों के लुप्तप्राय: होने के कारण।

- स्थानीय स्तर पर समुदाय में होने वाली समस्याएं एवं निराकरण।
- साहित्य, सर्वे, चर्चा, पोस्टर द्वारा अभियान, लोकसुनवाई एवं किसानों से वार्ता तथा क्षेत्र एवं विशेषज्ञों से संबंधित अन्य मुद्दे।

इकाई–4 : पाठ्यपुस्तक एवम् शिक्षण विधियों का संज्ञान (Cognition of teaching methods and text book)

- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के निर्माण के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार
- विषयवस्तु, उपागम और विज्ञान शिक्षण प्रविधियां अर्न्तक्रियात्मक और सहभागी शिक्षण विधियां, सुविधादाता के रूप में शिक्षक
- प्रकरण, इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और इनके निहितार्थ
- शैक्षिक मानदण्ड और अधिगम के सूचकांक।
- विज्ञान पाठ्यचर्या के प्रभावकारी विनिमय हेतु अधिगम स्रोत।

इकाई–5 : कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)

- विज्ञान शिक्षण हेतु शिक्षण तत्परता; कक्षावार, इकाईवार, कालखण्डवार वार्षिक योजना तैयार करना एवं उसका मूल्यांकन।
- योजना का मूल्यांकन
- आंकलन एवं मूल्यांकन परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), अधिगम का आंकलन, अधिगम के लिए आंकलन, रचनात्मक आंकलन और उपकरण, सारांशित मूल्यांकन, अधिभार सारणी प्रतिपृष्ठपोषण प्रतिवेदन प्रक्रिया, अभिलेखन और पंजीयन

सत्रगत कार्य (Assignment)

- अपने आसपास होने वाली वैज्ञानिक घटनाओं का अवलोकन करते हुए उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करना एवं अभिलेख बनाना।
- विज्ञान से संबधित प्रोजेक्ट कार्य
- प्रयोगों के आधारित एक पाठयोजना बनाना।
- विज्ञान के प्रादर्श निर्माण
- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्व

- वर्तमान में किसी एक कृषि समस्या को पहचानना उसके वैज्ञानिक कारण को जानते हुए समाधान पर आधारित अभिलेख तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- विभिन्न संदर्भों में सामान्य प्रयोग एवं अन्वेषण अयोजित करना
- वैज्ञानिक लेख, वैज्ञानिक भ्रमण, प्रोजेक्ट कार्य, विज्ञान संग्रहालय एवं विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- अवलोकन के अवसर प्रदान करना, समूह चर्चा, क्विज, पोर्टफोलियों घटना–प्रधान अवलोकन (एनेक्डाटल), बच्चों द्वारा अप्रत्याशित प्रश्न, पेपर पेंसिल परीक्षण आदि का उपयोग करना
- इकाईवार रचनावादी निर्माणवादी उपागम आधारित पाठयोजना निर्माण करवाना।
- किताब, फिल्म, मल्टी मीडिया पैकेज जैसी शिक्षण सामग्री की सहायता से अध्यापन ।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- मध्यप्रदेश में संचालित कक्षा 1 से 8 तक की विज्ञान विषय की पुस्तकें
- विज्ञान कक्षा 1 से 8 की विषय की NCERT द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तकें
- बाल वैज्ञानिक कक्षा 6,7 एवं 8 विज्ञान कार्य पुस्तकें 2000, पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल
- स्मॉल साइंस, विज्ञान कक्षा 6, 7 एवं 8 पाठ्य पुस्तकें 2003, होमी भाभा साइंस सेन्टर मुंबई
- प्राथमिक स्तर की पर्यावरण विषय की पुस्तकें । सी ई ई की किताबें ।
- सक्सेना, ए. बी. 2011 निर्माणवाद विज्ञान कक्षा ।
- ALM शिक्षक संदर्शिका राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल विज्ञान क्या है केरेन हेडाक
- विज्ञान में ज्ञान क्षेत्र, एन सी एफ (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- विज्ञान शिक्षण, एन सी एफ पोजी शान पेपर (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- NCERT(2005). Focus group paper on Science Education, Position Paper. New Delhi.
- Rampal, A. (1993). School science in search of a democratic order? In Kumar, K. (Ed.) Democracy and Education in India, New Delhi: NMML.
- Bal Vigyanik, Text books for Science, Class VI-VIII. Madhya Pradesh: Eklavya.
- Down to Earth,Centre for Science and Environment.
- NCERT, (2005). Syllabus for Classes at the Elementrary Level. Vol. I, New Delhi: NCERT.
- NCERT.(2008). Text books for Science, Class VI-VIII. New Delhi: NCERT. TEhelka Magazine.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)